....और आज तक न्याय नहीं पा सका 'हरियाणा का गांधी'

विजय शर्मा

करनाल, 15 नवम्बर। 'हरियाणा के गांधी' को सम्मान दिलाने के लिए उनका पूरा परिवार आज भी जद्दोजहद कर रहा है। बरसों पहले बंसीलाल सरकार के कार्यकाल में स्वतन्त्रता की 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा गठित की गई कमेटी ने स्वयं यह निर्णय लिया था कि किसी प्रमुख संस्था, शिक्षा संस्थान या भवन का नाम स्व. स्वतन्त्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन के नाम पर रखा जाएगा। यह वादा पूरा नहीं हुआ और प्रदेश के 'गांधी' को आज भी न्याय की प्रतीक्षा है।

स्वतन्त्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन के पैतृक गांव सिकन्दरपुर माजरा की पाठशाला में लगी उनकी प्रतिमा तथा एक कार्यक्रम के दौरान उन्हें माल्यार्पण करने पहुंचे मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के पिता रणबीर सिंह हुड्डा। फोटो/ हप्र

प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी मूल चंद जैन आरम्भ से ही क्रांतिकारी विचारों के थे और गांधी जी के विचारों व जैन धर्म शास्त्रों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव था। यही कारण था कि उन्हें छुआछूत से भारी नफरत ही नहीं थी। एक घटना को याद करते हुए उनके पुत्र एडवोकेट अशोक जैन ने बताया कि कॉलेज शिक्षा के दौरान ही उन्होंने महसूस किया कि गांव के उच्च वर्ग के द्वारा दलितों को उच्च वर्ग कुएं से पानी न भरने देना दलितों के साथ अन्याय है। उनका खून खोल उठा और उन्होंने गांव के दलितों को उच्च वर्ग के कुएं से पानी भरने के लिए प्रेरित ही नहीं किया बल्कि उच्च वर्ग के विरोध के बावजूद कुंए से पानी भरवाकर ही दम लिया। बाबू मूलचंद जैन का जन्म 20 अगस्त 1915 को गांव सिकन्दरपुर माजरा, तहसील गोहाना में हुआ था। उनकी कर्मस्थली पूरा राज्य विशेष रूप से करनाल रहा। सन् 1937 में रोहतक के असौंधा गांव में जब कांग्रेस की सभा पर जमींदारा लीग के हजारों कार्यकर्ताओं ने हमला बोलकर कांग्रेस के अनेक कार्यकर्ताओं को घायल कर दिया था, जिसमें बाबू मूलचंद जैन भी शामिल थे।

सन् 1940 में गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में उन्होंने बढ़ चढ़कर भाग लिया और 6 मार्च 1941 को उन्होंने अपनी जन्मभूमि गांव सिकन्दरपुर माजरा से ही सत्याग्रह शुरू कर दिया। इस पर उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार करके जेल भेज दिया और उन्होंने एक साल की सज़ा गुजरांवाला (पाकिस्तान) की जेल में काटी। सन् 1942 में गांधी जी द्वारा छेड़े गए भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर 11 अगस्त को उन्हें करनाल कचहरी से गिरफ्तार कर लिया गया और नजर बंद करके करनाल जेल भेज दिया। आजादी के बाद उन्होंने करनाल कचहरी में वकालत आरम्भ की। वह गरीबों व मुजारों की वकालत मुफ्त में ही करते थे। उन्होंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'बलिदान' का भी सम्पादन किया।

बाबू मूलचंद जैन सन 1952 में पहली बार समालखा से विधायक बने और सरदार प्रताप सिंह कैरो के मंत्रिमंडल में सन 1956 में कैबिनेट स्तर के मंत्री बने। सन् 1957 में कैथल से लोकसभा के सदस्य चुने गए। सन् 1962 में घरौंडा से कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ा परन्तु तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के अन्दरूनी विरोध के कारण चुनाव हारे गए। पुन: 1967 में वह घरौंडा से विधायक बने तथा राज्य के वित्तमंत्री बने। सन् 1975 में आपातकाल के दौरान वह 19 महीने जेल में रहे। सन् 1977 में वह समालखा से पुन: जनता पार्टी के टिकट पर विधायक बने तथा 1978 में राज्य के वित्तमंत्री बने। सन् 1985 में उन्होंने राजीव लोंगोवाल समझौते की धारा 7 तथा 9 का विरोध किया तथा सन् 1987 में राज्य के योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष बने। इस दौरान उन्होंने राज्य में शिक्षा के प्रसार के लिए पुस्तकालय आन्दोलन व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। श्री जैन जीवन के अंतिम समय तक सामाजिक कार्य एवं दलितों की सेवा में सक्रिय रहे तथा 12 सितम्बर 1997 को उनका देहान्त हो गया। बाबू मूलचंद जैन ने अपने 77वें जन्म दिवस पर 20 अगस्त 1991 को अपने पैतृक निवास को एक आदर्श पुस्तकालय के रूप में परिवर्तित कर गांव व क्षेत्र के लोगों को समर्पित कर दिया और तभी से हर वर्ष उनका जन्म दिन पुस्तकालय दिवस के रूप में हर वर्ष गांव में मनाया जाता है। हाल में ही उनकी 91वां जन्म दिवस 21 अगस्त 2005 को उनके पैतृक गांव सिकन्दरपुर माजरा में मनाया गया, इस समारोह के सभापति अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी संगठन के अध्यक्ष व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के पिता रणबीर सिंह हुड्डा थे। बाबू मूलचंद जैन के परिवारजनों की यह इच्छा है कि राज्य सरकार द्वारा उनके जन्मदिवस 20 अगस्त को पुस्तकालय दिवस घोषित किया जाए।

Downloaded from moolchandjain.org